Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4 November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III

23

आधुनिकतावादी संवेदना का काव्यात्मक रूप 'संशय की एक रात'

प्रा. डॉ. दिलीप पंडीत पाटील
हिंदी विभाग
पंकज कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय, चोपडा, जि. जलगाँव

हिंदी साहित्य के सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार ज्ञानपीठ से पुरस्कृत महान लेखक नरेश मेहता की पहचान एक ऐसी काव्य-दृष्टि के रूप में की जाती है, जो आधुनिक मनुष्य के भीतरी जगत, उसकी जटिलताओं और आध्यात्मिक खोज को नए काव्य-विधान में व्यक्त करती है। यह काव्य मूल रूप से एक रात के भीतर घटित होने वाले आत्म-संघर्ष का आख्यान है। नरेश मेहता सप्तक कवियों में प्रमुख कवि रहे है। ये इनकी पीढ़ी के अन्य कवियों की अपेक्षा अधिक प्रखर रहे है। 'संशय की एक रात' इनका पौराणिक खंडकाव्य है। आधुनिक मनुष्य की आत्म-संघर्षशील चेतना को इसमें अभिव्यक्त किया है। प्रसंग है, राम रावण युद्ध। इस काव्य में कवि ने युद्ध से पहले राम के मन में उठ रहे संशय को आधुनिक मनुष्य की चिंता के रूप में चित्रित करने का प्रयास किया है।

नरेश मेहता द्वारा रचित 'संशय की एक रात' नामक खंडकाव्य में राम की परम्परागत कथा को एक नई दृष्टि से देखा गया है। रामायण और राम विषयक अन्य काव्य कृतियों में श्रीराम प्रायः शील, शक्ति और सौंदर्य के एकत्रित व्यक्तित्व के रूप में वर्णित हुए हैं। श्रीराम स्वयं अपने आप में एक परम्परा की तरह है। सामान्य पाठक के लिए वे मर्यादा पुरुषोत्तम राम हैं। आदर्श राजा, आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श सखा आदि विविध रूपों में वे भारतीय जनमानस में जाने-पहचाने जाते हैं। किन्तु प्रस्तुत प्रबंध में वे परस्पर विरोधी विचारों, मान्यताओं और आस्थाओं के बीच उलझे हुए दिखाई देते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो मनोवैज्ञानिक रीति से उनमें खण्डित व्यक्तित्व का आरोप किया गया है, जिसमें युद्ध और शांति, विराटत्व के साथ लघुत्व का बोध, एकान्तिक आत्म-मंथन और सामूहिक दायित्व-बोध, व्यक्ति तथा समूह को लेकर विरोधी निष्ठाओं का रूप चित्रित हुआ है।

आधुनिक विसंगतियों का राम में आरोपण तथा उनके माध्यम से अपने युग की समस्याओं के समाधान के रूप में विपरीत मूल्यों और मान्यताओं के बीच एक सही दृष्टि अपनाने की प्रेरणा ही इस कृति का मूल उद्देश है। यह समस्या अपने आप में कोई नयी चीज नहीं है। इस प्रकार की स्थितिया मानव समाज तथा इतिहास में बराबर उठती रही है, लेकिन प्रत्येक युग का 'संशय' अपने ऐतिहासिक दास्य और मजबूरी से अद्वितीय हो जाता है।

समष्टि के लिए व्यष्टि को समर्पित किया जा सकता है, यह इस युग की माँग है। राम अपनी प्रज्ञा और विवेक को परिषद की इच्छा के सामने विसर्जित कर देते है। जागरूक मानव अपनी स्वतंत्रता को किसी भी मूल्य पर नहीं छोड़ सकता। सामाजिक चेतना और व्यक्ति चेतना को विभाजित कर देखा नहीं जा सकता। राम अपना संशय और युद्ध से बचाने का निर्णय थोपना नहीं चाहते। एक शासक को लोगों के मतों का आदर करना चाहिए, राम ने अपना निर्णय जनसमर्थन पाकर ही किया। राम मानव सत्य की खोज करना चाहते है। रक्त बहाना यह किसी भी खोज का समाधान नहीं हो सकता। वह समाधान मानवीय गुणों के द्वारा मानव के भीतर से ही प्रकट हो सकता है।

'संशय की एक रात' नाट्यशैली में लिखा गया खडकाव्य है। नरेश मेहता के राम सबके निर्णय में अपना निर्णय मानते हैं – "अब मैं निर्णय हूँ सबका, अपना नहीं।"[1] इस प्रकार के बहुआयामी व्यक्तित्व से हिंदी साहित्य की हर एक विधा को नरेश मेहता जी ने तेज प्रदान किया है। इस खंडकाव्य की कथावस्तु चार सर्गों में विभाजित है – साँझ का विस्तार और बालूतट, वर्षा भीगे अंधकार का आगमन, मध्यरात्रि की मंत्रणा और निर्णय, संदिग्ध मन का संकल्प और सवेरा। प्रस्तुत खंडकाव्य का आरंभ रामेश्वर के सिंधु तट से होता है। जहाँ श्रीराम चिंताओं में जकड़े हुए उपस्थित हैं। सीता का उद्धार कैसे हो? इसी प्रश्न ने उन्हें बुरी तरह झंझोड़ दिया हैं। उनके इस मानसिक अंतर्द्वंद्व और अनिश्चितता की स्थिति निम्न पंक्तियों में दृष्टिगत होती है –

कितनी बार,
कितनी साँझ
इस सिंधु बेला तट,
बितायी, काट दी, पर व्यर्थ। [2]

वे चिंतन में लीन हैं। उन्हें स्मरण हैं कि उन्होंने रावण के क्रूर पंजों से सीता को बचाने के लिए सभी संभव प्रयास किए। दूत भेजे किंतु उन्हें केवल निराशा ही हाथ लगी। आज उन्हें रह-रहकर यह बात सल रही हैं कि सीता को छुड़ा न सकने के कारण राजा जनक, पुरवासी और यहाँ तक कि स्वयं जानकी भी पता नहीं, क्या-क्या सोच रही होगी?

©Copyright 2024 *ADRJ*. All Rights Reserved

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4 November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III

राम अकेले सेतुबंध की ओर निकल आते हैं। उन्हें अभी भी युद्ध की चिंता उद्विग्न किए हुए हैं। साथ ही लक्ष्मण, हनुमान और विभीषण भी शिविर जाते है। राम अभी भी चिंता में लीन हैं। उनके दृष्टि में यदि सभी मानवीय प्रश्नों का एकमात्र उत्तर खड्ग और युद्ध हैं, तो उन्हें ऐसा युद्ध और ऐसे विषय कदापि नहीं चाहिए। उनके चिंतन की स्पष्टता और दृढ़ता देखिए –

मुझे ऐसी जय नहीं चाहिए,
बाणबिद्ध पाखीसा विवश
x x x
सीता भी नहीं चाहिए,
सीता भी नहीं चाहिए। [3]

राम मानते है कि इतिहास के हाथों व्यक्ति एक व्यक्ति न होकर केवल शस्त्र होता है। राम युद्ध की अनुमति अवश्य देते हैं किंतु उन्हें बार-बार यह प्रश्न कचोटता है "क्या आनेवाली पीढ़ियाँ इस बात पर विश्वास कर सकेंगी कि राम ने युद्ध करने के पूर्व इतनी गहराई से इस समूचे प्रश्न पर विचार किया था?"[4] राम इन सारी परिस्थितियों में अपने आप को सर्वथा अस्वस्थ और निराश महसूस करते हैं। रामराज्य यह वास्तविकत: प्रजातंत्र था, उसी के कारण राम जब संशय से घिर जाते हैं तो युद्ध का निर्णय संसद पर सौंप देते हैं और संसद बहुमत के आधार पर यह निर्णय लेती हैं कि, युद्ध होगा। तब युद्ध को लेकर राम के मन में स्थित संशय समाप्त हो जाता हैं और वे भी संकल्प करते हैं कि युद्ध को रोक पाना उनके हाथों के बाहर की बात है और अब तो केवल सेना की पगध्वनियाँ, रणनिनाद, युद्ध-घोष और झंडे ही बचे हैं। लेकिन अंत में वे कहते है –

अब मैं केवल
प्रतिक्षा हूँ
कवचित कर्म हूँ
प्रतिश्रृत युद्ध हूँ।
निर्णय हूँ सबका
सबके लिए,
केवल अपने ही लिए
संभवत: नहीं !
नहीं !![5]

'संशय की एक रात' खंडकाव्य में कई समस्याएँ है बल्कि यूँ कहे कि यह एक समस्याओं की मंजुषा की तरह हैं, जिसकी प्रत्येक पंक्ति से एक समस्या निकलकर आती है। समग्र कृति में प्रश्न ही प्रश्न है और इनसे निर्मित हुआ है – संशय का एक दुर्बेध व्यूह। राम इस व्युह में उलझ गये हैं। यद्यपि लक्ष्मण और हनुमान आदि ने इस व्यूह को तोड़ने का अथक प्रयास किया है। किंतु राम का आधा व्यक्तित्व इन समस्याओं से अंत तक मुक्त नहीं होता।

प्रस्तुत कृति में नरेश मेहता ने वर्तमान युगीन समस्याओं को केंद्र में रखकर लिखी जिसके अनुरूप राम के चरित्र को ढाला है। खण्डकाव्य के नायक राम के सामने वैयक्तिकता तथा सार्वजनिकता, युद्ध और शांति, विराटत्व के साथ-साथ लघुत्व का बोध, एकात्मिक आत्ममंथन और सामुहिक दायित्वबोध, आधुनिक युग के खंडित व्यक्तित्व तथा मूल्यों की खोज आदि समस्याओं को केंद्रित किया है।

वैयक्तिकता तथा सार्वजनिकता पर विचार करें, तो व्यक्ति का व्यक्तित्व भी सार्वजनिक हो सकता है? पूरा खंडकाव्य इसी केंद्र पर आधारित है। राम के सामने जो बार-बार यह प्रश्न उठता है कि क्या सीता की मुक्ति सार्वजनिक हो सकती है? वैयक्तिकता कब और किन परिस्थितियों में सार्वजनिक हो सकती हैं और यदि ऐसा नहीं होता तो क्या उस वैयक्तिकता को व्यक्तिगत तक ही रहने दिया जाए ? जैसे. व्यक्ति की मर्यादा और सार्वजनिक आचरण की समस्या भी राम को संशय में डालती है। यह नितांत आधुनिक समस्या है।

उसी प्रकार प्रस्तुत खंडकाव्य की प्रमुख समस्या है - युद्ध और शांति। प्रस्तुत कृति मूल रूप में इसी समस्या के आवर्त में घूमती रहती है। सीता का रावण ने अपहरण कर लिया है। उसकी मुक्ति हेतु युद्ध अथवा शांति में से किस मार्ग को अपनाया जाए यह प्रश्न राम के मानसपटल को मथ रहा है। उनका अंतर्द्वंद्व निष्कर्ष पर नहीं पहुँच पा रहा है। उन्होंने रावण से सुलह करने के काफी प्रयास किये हैं, लेकिन शांति के सब दूत लौटे, जबकि युद्ध ही एकमात्र मार्ग रह गया है तब भी राम शांति कामी हैं। आदर्शों के प्रति उनका अटूट विश्वास उन्हें युद्ध से नहीं बल्कि शांति से मार्ग निकालना था, जबकि लक्ष्मण और हनुमान विशुद्ध रूप से युद्ध के पक्षधर हैं। ऐसा नहीं है कि राम कायर है अथवा युद्ध के परिणाम से भयभीत हैं। वे कहते है –

मैं नहीं हूँ का पुरुष,
युद्ध मेरी नहीं कुण्ठा,

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4 November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III

पर युद्ध प्रिय भी नहीं।"[6]

लेकिन जब सामूहिक निर्णय ही युद्ध के पक्ष में हो तो एक व्यक्ति का निर्णय निरर्थक ही होता है। परिस्थितियों से समझौता करके राम ने अन्ततः अपनी शांति कामना का गला घोटकर युद्ध का निर्णय लिया। यद्यपि अंत तक उनका यह संशय दूर न हुआ कि जो यह करने जा रहे हैं क्या वह अनुचित नहीं है? इसीलिए वे अंत में इसी निर्णय पर आते हैं कि, "अब में निर्णय हूँ सबका अपना नहीं।"[7]

विराटत्व के साथ लघुत्व के बोध की समस्या एक ओर इस खंडकाव्य की समस्या है। राम जिस विराटत्व की कल्पना में चंद पलों के विचारों को, निष्ठा और पर्याय को, कर्म और वर्चस्व पर शंका न लेकर अपने से अलग कर देना चाहते हैं, वहीं पर लक्ष्मण इनकी परंपरागत अर्थवत्ता में अर्थ के नये आयाम जोड़ देते है। इस दृष्टि से इस काव्य में विराटत्व की असिमता और लघुत्व की सघनता दोनों को राम तथा लक्ष्मण के माध्यम से प्रस्तुत किया हैं। साथ ही सहजता की समस्या को हनुमान और जामवंत आदि में व्यक्त किया हैं। राम का विराटत्व व्यक्ति एवं समाज की सुविधा में है, इतिहास की प्रतिबद्धता और इतिहास के मुक्ति के संघर्ष में है।

खंडकाव्य की अन्य समस्या है ऐकान्तिक आत्म-मंथन और सामुहिक दायित्व-बोध। जिसे कवि ने बड़ी गंभीरता तथा कलात्मक विवेक एवं संयम के साथ प्रस्तुत किया है। खंडकाव्य के राम इसी समस्या से घिरे हुए हैं। राम की संपूर्ण संवदेना का विशेष यह है कि जब वह एकांत होती है, तो सामुहिकता से ओत-प्रोत होती हैं और जब जीवंत सामुहिकता को स्वीकारती हैं तो नितांत एकांत हो जाती है। इन दोनों विरोधी स्थितियों का समाधान ही कवि की समस्या है। यह समस्या रामायण के राम की नहीं बल्कि नरेश मेहता के राम की हैं क्योंकि वह संक्रमण काल के जागृत कवि हैं।

आधुनिक युग के खंडित व्यक्तित्व की समस्या को भी प्रस्तुत खंडकाव्य में उठाया गया है। समाज में जैसे ही अभिजात तत्वों का विकास होता हैं, वैसे ही मानव आचरण के विधेय भी जटिल होते जाते हैं। मानव चेतना की प्रारंभिक स्थिति बहुत सीधी अनुभूति थी उनमें तराशा नहीं थी क्योंकि सारी मानवीय चेतना एक सीधी रेखा के समान चलती थी। जीवन में तराश के स्थान पर कुछ व्यावहारिक रूढ़ियाँ थी, जिन्हें पूरा कर देने के बाद व्यक्ति अपने आपको मुक्त समझता था। वाल्मीकि और तुलसी के राम जटिल नहीं है बल्कि कथ्य के अनुरूप है। जबकि इसके विपरित आज की चेतना विभिन्न आयामों पर साथ ही आचरित होती हैं। अनेक रूढ़ियों का स्थान मूल्यों ने ले लिया हैं और एक स्थिति में दो विरूद्ध मूल्य एक-दूसरे में घुलते-मिलते नहीं है। इसीलिए नरेश मेहता के राम आज के मनुष्य की तरह कहते हैं – दो सत्य, दो संकल्प, दो-दो आस्थाएँ व्यक्ति में ही अप्रमाणित व्यक्ति पैदा हो गया हैं।

जिस काल में प्रस्तुत खंडकाव्य लिखा गया वह मानव-मूल्यों की गवेषणा का युग हैं। खंडकाव्य की समस्या यह है कि उन मूल्यों का अन्वेषण कैसे किया जाए जिनके कारण आज के संदर्भ में सार्थकता प्रदान की जा सके। मूल्यों की निरर्थकता-सार्थकता का बोध, मूल्यों के अन्वेषण की प्रेरणा देते हैं। यह पुनर्मूल्यांकन की समस्या मुख्यत: दो पात्रों के तीव्रतम रूप में अभिव्यक्त हुई हैं - एक राम और दूसरे विभीषण। राम के इस चिंतन में परंपरा, इतिहास और मानव-विशेष को लेकर बेचैनी है वह अपने पद की जिज्ञासा से भागना नहीं चाहता तो विभीषण में यही संशय एक विस्थापित व्यक्तित्व की समस्या बनकर सामने आता है।

इस प्रकार राम के चरित्र को देखते हुए तथा प्रस्तुत खंडकाव्य की समस्याओं को निहारते हुए यह स्पष्ट होता है कि कवि द्वारा खंडकाव्य को जो यह शीर्षक दिया गया है वह सार्थक दृष्टिगत होता है। साहित्यकार अपनी कृति का नाम अत्यंत सोच-समझकर रखता हैं। डॉ.कृष्णदेव शर्मा के मतानुसार "कृति के नामकरण के अनेक आधार हो सकते हैं जैसे कि कृति में वर्णित कोई महत्वपूर्ण घटना, कोई विशेष पात्र अथवा ऐसा ही कोई अन्य आधार। नामकरण की एक अन्यतम विशेषता यह होती है कि वह चित्ताकर्षक होने के साथ-साथ साहित्यिक कृति की अन्तर्वस्तू का परिचय भी देता है। कई बार शीर्षक देते समय मुख्य पात्र या घटना तथा समस्या को प्रधानता दी जाती हैं।"[8] प्रस्तुत खंडकाव्य को कवि नरेश मेहता ने 'संशय की एक रात' शीर्षक दिया है। पूरे खंडकाव्य में केंद्रीय पात्र राम ही नज़र आते है जिनका मन संशयी है। रावण से युद्ध करने के पूर्व राम विभिन्न प्रकार के संशयों से घिरे हुए है। सीता हरण यह राम अपनी व्यक्तिगत समस्या मानते है, वे चाहते है कि उनके इस व्यक्तिगत समस्या की तकलीफ निर्दोष नागरिक अपने प्राणों की आहुति देकर न करें। इसी कारण उनका मन संशय से घिरा है कि मेरी इस समस्या के निवारण हेतु अन्यों की जान खतरें में डालना उचित नहीं है। संपूर्ण कथा में राम का संशय ही दिखाई देता है जिसके कारण प्रस्तुत खंडकाव्य का शीर्षक सर्वथा सार्थक लगता है।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि नरेश मेहता ने 'संशय की एक रात' यह खंडकाव्य पौराणिक कथा के माध्यम से आधुनिक समस्याओं को व्यक्त करने का सफल प्रयास किया है। जिसमें मर्यादा पुरूषोत्तम राम का चित्रण भी स्पष्टत: दिखाई देता है। जिसमें उन्होंने संशय द्वारा युद्ध की अपेक्षा शांति की सापेक्षता एवं श्रेष्ठता को महत्व दिया है। संपूर्ण खंडकाव्य अनेक समस्याओं से घिरा हैं। व्यष्टि एवं समष्टि, युद्ध एवं शांति, विराटत्व के साथ लघुत्व का बोध, आधुनिक युग के खंडीत व्यक्तित्व की समस्या।

व्यष्टि और समष्टि के द्वंद्व के कारण राम के मन में यह संशय निर्माण हो जाता है कि सीता हरण यदि मेरी व्यक्तिगत समस्या है, तो उसके लिए मै समस्त वानर सेना के प्राण क्यों खतरे में डालू? इस समस्या के माध्यम से कवि ने यह समझाने की कोशिश की है कि किन

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4 November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III

परिस्थितियों में व्यक्ति का वैयक्तिक जीवन सामूहिक बन जाता है। सीता जब केवल राम की पत्नी न रहकर समस्त वानरों के स्वतंत्रता का प्रतीक बन जाती है, तब उसके हरण की समस्या राम की व्यक्तिगत समस्या न रहकर सामूहिक समस्या बन जाती है।

युद्ध और शांति की समस्या के द्वंद्व में भी राम के मन में यह संशय बढ़ता है कि क्या विश्वास है कि युद्ध के बाद शांति होगी ही ? युद्ध से होनेवाली मानव हानी को लेकर राम विचलित है। कवि यह बताना चाह रहे हैं कि यह समस्या नितांत आधुनिक है। आधुनिक काल में कई प्रश्न इतने जटिल हो गए है कि उन्हें हल करने हेतु युद्ध भी किया जाए तो भी यह पूर्णतः हल होंगे ही ऐसा दावा नहीं किया जा सकता।

संदर्भ :

1) संशय की एक रात – नरेश मेहता, प्राक्कथन, पृ. 12
2) संशय की एक रात – नरेश मेहता, प्रथम सर्ग, पृ. 3
3) पूर्ववत् – द्वितीय सर्ग, पृ. 32
4) पूर्ववत् – प्राक्कथन, पृ. 19
5) पूर्ववत् – चतुर्थ सर्ग, पृ. 92-93
6) पूर्ववत् – चतुर्थ सर्ग, पृ. 85
7) पूर्ववत् – चतुर्थ सर्ग, पृ. 86
8) कर्मभूमि : एक विवेचन – समीक्षक – कृष्णदेव शर्मा, पृ. 16